P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-2* October- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भजन और पद्मश्री पुरुषोत्तम दास जलोटा

शारदा देवड़ा
शोधार्थी,
संगीत विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

भजन अर्थात् ईश्वरीय सत्ता के साथ आत्मसत्ता का समीकरण–परस्पर विलय–समन्वय की अनुभूति। मनन अर्थात् आत्मबोध। शरीर और आत्मा के स्वार्थ और सम्बन्धों का पृथक्करण। जीवन लक्ष्य के प्रति आस्था और रीति–नीति का साहस पूर्वक निर्धारण, दोनों की साधना विधियाँ सरल हैं। एक ही समय या दो पृथक–पृथक सुविधा के समय और शान्त एकान्त स्थान में सुसंतुलित चित्त से यह दोनों ध्यान चिन्तन किये जा सकते हैं। भावनाओं की जितनी गहराई इनमें लगेगी उतनी ही अंतर्ज्योति प्रखर होती चली जायेगी और आत्मा के साथ परमात्मा का प्रणय–परिणय होने पर जिन दिव्य–सम्पदाओं की उपलब्धि होनी चाहिए, वे सहज ही करतलगत होती चली जाएँगी। ऐसे ही भजनों के सम्राट कहलाने वाले पद्मश्री पुरुषोत्तमदास जलोटा थे, जो एक प्रतिष्ठित शास्त्रीय गायक तो थे ही उनका भजनों के लिए अतुल्य योगदान रहा।

पुरुषोत्तम दास की खासियत यह रही कि उन्होंने तमाम जाने माने संतों के लिखे भजन गाकर भारतीय संस्कृति को आगे बढ़ाने में योगदान दिया।

मुख्य शब्द : मनन, आत्मबोध, भक्ति, भजन।

प्रस्तावना

वेद और शास्त्रों में ईश्वर को 'सच्चिदानंद' कहते हैं । 'सत्' नाश रहित, 'चित्' अखण्ड ज्ञान स्वरूप, 'आनंद' आनन्द स्वरूप इसका अर्थ है । ईश्वर के, अपनी मायाशक्ति द्वारा अपने सच्चिदानन्द स्वरूप को अनेको प्रकारों से संकुचित करने से प्रपन्च की सृष्टि हुई हैए ईश्वर की प्रथम सृष्टि आकाश है। आकाश का गुण है नाद। इसी कारण से आकाश और उसके गुण नाद में अन्य विषयों से भी अधिक परिमाण में ईश्वर का स्वरूप विकसित है। अर्थात् आनंद का आविर्भाव आकाश में तथा उससे सम्बद्ध श्रवाणानुभव में अधिक है। इसीलिए इन्द्रिय–जन्य विषय–सुखों में से कान से अनुभव किये जाने वाले संगीत में अन्य सुखों की अपेक्षा ज्यादा सुख है ।[1]

भक्ति क्या है ? भक्ति ईश्वर की प्राप्ति का साधन है। 'भक्ति परमेश्वर के चरण–कमलों से भक्तों के हृदय को बाँधने वाली सूक्ष्म प्रेम–रज्जू है।'2 भक्ति से क्या लाभ है ? भक्ति की भावना से ही हम इस सचाई को महसूस करते हैं कि ईश्वर ने हमे कितना कुछ दिया है। वह हमारे प्रति कितना उदार है। इससे हमें अपनी लघुता और उसकी महानता का बोध होता है , अपनी इच्छाओं और इंद्रियों पर नियंत्रण की शक्ति प्राप्त होती है और दूसरे जीवों के प्रति प्रेम का भाव पैदा होता है।

भक्ति कैसे की जाती है ?

शास्त्रों में हमें अनेक प्रकार के भक्ति मार्गों का वर्णन मिलेगा। हमारे श्रीरूप गोस्वामी जी ने भक्ति के 64 तरीके बताए हैं। प्रहलाद ने श्रीमद्भागवत में ईश्वर को प्रसन्न करने के 9 तरीके बताए हैं। ये हैं श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन व दास्य भाव आदि। श्री चौतन्य चरितामृत में भगवान के ही मुख से कहलाया गया है कि मैं पाँच तरह से बहुत प्रसन्न होता हूँ। ये हैं साधु–संग, नाम–कीर्तन, भगवत्–श्रवण, तीर्थ वास और श्रद्धा के साथ श्रीमूर्ति सेवा। वे आगे कहते हैं कि इन पांचों में से यदि किसी मार्ग का अवलंबन श्रद्धा के साथ किया जाए तो वह हृदय में भगवत प्रेम उत्पन्न करेगा। इस विषय में महाप्रभु कहते हैं कि नवधा भक्ति के नौ अंगों में से किसी एक अंग का भी

आचरण करने से भगवत–प्रेम की प्राप्ति हो सकती है। परन्तु इन नौ अंगों में भी श्रवण, कीर्तन व स्मरण रूप श्रेष्ठ है।

इन सभी मार्गों में श्रेष्ठ भक्ति मार्ग कौन सा है ?

भगवान की प्राप्ति का सरल भक्त–जीवन में केवल नामाश्रय ही सर्वोत्तम साधन है । नवधा भक्ति में भी श्रीनाम के जाप और स्मरण को सर्वश्रेष्ठ बताया गया है। यदि निश्छल भाव से हरिनाम का कीर्तन किया जाए तो अल्प समय में ही प्रभु की कृपा प्राप्त होगी। नाम संकीर्तन करना ही भगवान् को प्रसन्न करने का सर्वोत्तम तरीका है, यही सर्वोत्तम भजन है। सरल शब्दों में कहते तो भगवान का नाम भजना ही भजन है। जिस युग में हम रह रहे हैं, इस में तो भवसागर पार जाने का यही एक उपाय है। शास्त्र तो कहते हैं कि कलिकाल में एकमात्र हरिनाम संकीर्तन के द्वारा ही भगवान की आराधना होती है। नाम संकीर्तन का सुझाव किन ग्रंथों में दिया गया है? श्रीमद्भागवत कहता है कि कलियुग में श्रीहरिनाम–संकीर्तन यज्ञ के द्वारा ही आराधना करना शास्त्रसम्मत है। वे लोग बुद्धिमान हैं जो नाम संकीर्तन रूपी यज्ञ के द्वारा कृष्ण की आराधना करते हैं। रामचरित मानस में भी कहा गया है कि कलियुग में भव सागर पार करने के लिए राम नाम छोड़ कर और कोई आधार नहीं है।

'कलियुग समजुग आन नहीं , जो नर कर विश्वास।
गाई राम गुण गन विमल , भव तर बिनहिं प्रयास ।।'

नाम संकीर्तन में कथा श्रवण का क्या महत्व है ? जीवन में ऐसा अक्सर देखने को मिलता कि किसी व्यक्ति या स्थान को हमने देखा तक नहीं होता , परन्तु उनके बारे में समाचार पत्रों व पत्रिकाओं में पढ़ने से हमें काफी आनंद मिलता है। ठीक इसी प्रकार भगवद धाम , आनन्द धाम , वहाँ के वातावरण या प्रभु की लीलाओं के बारे में सुन कर हमें आनंद प्राप्त होता है , हमारा चित्त स्थिर होता है और चंचल मन भटकने से रुकता है। ये कथाएं हमारे वेद–शास्त्रों में वर्णित हैं , जिन्हें पढ़ने या सुनने से हमें भगवान के विषय में कुछ जानकारी भी प्राप्त होती है।

भजन –कीर्तन करने से क्या होता है और इसे किस प्रकार करना चाहिए ? गोस्वामी जी कहते हैं कि आप भक्ति का कोई भी मार्ग अपनाएं , उसे श्रीनाम कीर्तन के संयोग से ही करें। इसका फल अवश्य प्राप्त होता है और शीघ्र प्राप्त होता है।

अध्यात्म की दुनिया सबसे अलग है, इसमें सब सत्य, साफ और निश्छल है। इस अनोखी दुनिया में पहुंचने का रास्ता हमारे अंर्तमन से होकर जाता है। अध्यात्म के कई रुप हैं, योग, धर्म, कर्म और तपस्या इसमें मुख्य हैं। जीवन में मानसिक शांति के लिए अध्यात्म से बेहतर कुछ नहीं माना जाता है लेकिन मनुष्य अध्यात्म में कब डूबता है, क्या आध्यात्मिक बनने के लिए किसी वक्त और जगह का मोहताज होना पड़ता है?

सब कहते हैं कि भगवान का भजन करो.....भजन करो!
तो क्या करें हम भगवान का भजन करने के लिए ?

सच्चे भक्तों के संग हरिनाम संकीर्तन करना ही सर्वोत्तम भगवद भजन है। सच्चे भक्तों के साथ मिलकर , उनके आश्रय में रहकर नाम– संकीर्तन करने से एक अद्भुत प्रसन्नता होती है , उसमें सामूहिकता होती है , व्यक्तिगत अहंकार नहीं होता और उतनी प्रसन्नता अन्य किसी भी साधन से नहीं होती , इसीलिए इसे सर्वोत्तम हरिभजन माना गया है।

हिन्दू प्रार्थना का एक तरीका है – भजन। हिन्दू प्रार्थना को संध्यावंदन कहते हैं। सूर्य और तारों से रहित दिन–रात की संधि को संध्या वंदन कहते हैं।

'शास्त्रीय संगीत की श्रेणी में आज हम जिस संगीत को रख रहें हैं, वह शास्त्रगत नियमों में आबद्ध तो है, परन्तु संगीत के अब तक के इतिहास पर विहंगम दृष्टि डालने पर हम यह पाते हैं कि विभिन्न सामाजिक व राजनितिक परिस्थितियों के प्रभाव स्वरूप समय–समय पर इसके स्वरूप में अनेक परिवर्तन हुए हैं, जिसमें श्रोताओं की बदलती हुई मानसिक अवस्था व रूचि ने भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।'[3]

भजन सम्राट पद्मश्री पुरुषोत्तमदास जलोटा

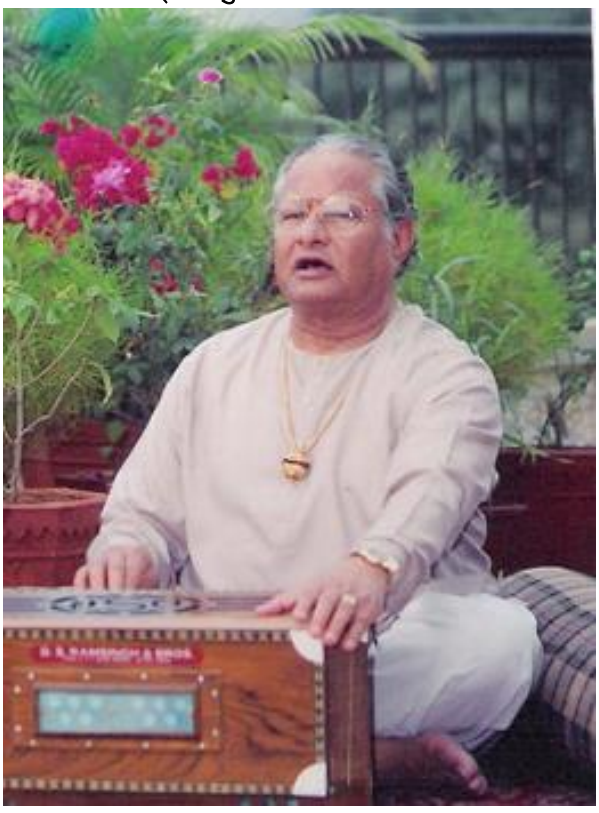

सन् 1925 में फगवाड़ा (पंजाब) में जन्मे पद्मश्री पुरुषोत्तम दास जलोटा ने भारतीय शास्त्रीय संगीत की शिक्षा श्याम चौरासी घराने के गुरु मास्टर रतन से ग्रहण की। आगे चल कर अध्यात्म में गहरी रूचि होने के कारण इन्होनें भजन गायकी के क्षेत्र में प्रवेश किया तथा सन्त–कवियों के सैकड़ों भजनों को रागदारी संगीत में ढाला। अनेक पुरस्कारों से सम्मानित पुरुषोत्तम दास जलोटा को सन् 2004 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया। [4]

भजन सम्राट पद्मश्री पुरुषोत्तमदास जलोटा की गायन शैली

पुरुषोत्तम दास जलोटा भजनों को शास्त्रीय संगीत से सजा–संवार कर ही प्रस्तुत करते थे । पुरुषोत्तम दास जलोटा कि भावपूर्ण और दमदार गायकी के देश ही नहीं विदेशों में लोग प्रशंसक थे।

शास्त्रीय गायक के रूप में ख्याति प्राप्त पुरुषोत्तम दास जलोटा भजनों को ज्यादा पसंद करते थे। उनका मानना था कि शास्त्रीय संगीत एक विशेष वर्ग के लिए है इससे हम आमजन को क्या दे पाते है ? एक आम आदमी तो यह भी नहीं समझता है कि मैंने धैवत कैसे लगाया और निषाद कैसे लगाया ! परन्तु भजन में तो बस भगवान में आस्था रख कर गाना है और लोगों को उसमें भगवान के दर्शन हो जाते हैं । इसी विचारधारा के साथ पुरुषोत्तम दास जलोटा की भजन गायकी की शुरुआत हुई ।[5]

श्री पुरुषोत्तम दास जलोटा ने भजन गायन में सैकड़ों छात्रों को प्रशिक्षित किया और इन सब के पीछे एक ही मंशा थी, वो थी भजन गायकी को अगली पीढ़ी तक ले जाने और उसको आगे बढ़ाने की,जो उनके बेटे अनूप जलोटा, द्वारा भली–भांति की जा रही है ।'जब अनूप गजलों की तरफ मुड़ रहा था तो श्री पुरुषोत्तम दास जलोटा ने कहा, 'देखो अनूप ! तुम गजल गाने में तुम्हारा नाम नहीं होगा। अगर प्रोफेशन बनाना है तो भजनों में डूब जाओ । ''[6]

यह आम आदमी के लिए पुरुषोत्तम दास जलोटा जी का सबसे बड़ा योगदान है कि उनके द्वारा गाये भजनों के माध्यम से प्रेम, भक्ति, विश्वास, सहिष्णुता और शांति के संदेश के साथ साहित्य और संगीत के सुन्दर मेल से भक्ति संगीत का खजाना मिला ।

पुरुषोत्तम दास की खासियत यह रही कि उन्होंने तमाम जाने माने संतों के लिखे भजन गाकर भारतीय संस्कृति को आगे बढ़ाने में योगदान दिया। यही नहीं भजनों को केवल धार्मिक समारोहों से निकाल कर कॉन्सर्ट में लोकप्रिय बना देने का श्रेय भी उन्हीं को है जिसका भरपूर लाभ बाद में अनूप जलोटा को मिला।

श्री पुरुषोत्तम दास जलोटा जी को प्राप्त सम्मान एवं पुरुस्कार

1. भारत सरकार द्वारा वर्ष 2004 में "पद्मश्री" पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।
2. "आचार्य" और कानपुर ललित कला विद्यापीठ द्वारा "संगीत शिरोमणि"उपाधि से सम्मानित किया गया ।
3. सूरदास अकादमी, आगरा द्वारा "सुर पुरस्कार " से सम्मानित किया गया।
4. सुर सिंगार मुम्बई द्वारा "रसेश्वर" उपाधि से सम्मानित किया गया।
5. अखिल भारतीय हिन्दू महासभा ने "भजन सम्राट" की उपाधि देकर सम्मानित किया ।
6. विश्व जागृति संस्था, नई दिल्ली द्वारा "राष्ट्र भूषण" उपाधि से नवाजा गया।
7. संयुक्त राज्य अमेरिका के शहर शिकागो से मेयर ने कुंजी द्वारा सम्मानित किया।
8. बाल्टीमोर के मेयर द्वारा बाल्टीमोर, अमेरिका की मानद नागरिकता प्रदान की गई।

अध्ययन का उद्देश्य

इस विषय का उद्देश्य यही है कि पद्मश्री पुरुषोत्तम दास जलोटा ने अपना सम्पूर्ण जीवन संगीत को समर्पित किया और भजनों के माध्यम से भक्ति, प्रेम, सहिष्णुता आदि भावों को आम जन तक पहुँचाया ।

निष्कर्ष

ईश्वर उपासना कि अनेक विधियों में संगीत के माध्यम से की गई भक्ति श्रेष्ठ मानी गई है । संगीत द्वारा भगवान कि भक्ति का मार्ग अत्यंत सरल और सुखदायी होता है । आदिकाल से ही संगीत द्वारा ही ईश्वर की पूजा और भजन होता आया है और ऐसे ही भजन के पुरोधा थे, पद्मश्री पुरुषोत्तम दास जलोटा ।

पद्मश्री पुरुषोत्तम दास जलोटा ने भारतीय शास्त्रीय संगीत की पृष्ठभूमि से होते हुए भी भजन गायन को चुना और शास्त्रीय संगीत की स्वर–लहरियों से भजनों को सुसज्जित करते हुए सहज और सुगम तरीके से भजन गायन शैली का निर्वाह किया ।संगीत जगत इनके अमूल्य योगदान को भुला नहीं सकता।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *के. वासुदेव, संगीत शास्त्र, पृ. 9 शास्त्री प्रकाशन शाखा, सूचना विभाग, उत्तरप्रदेश 1958*

2. *श्री स्वामी शिवानन्द सरस्वती, भक्ति योग साधन,पृ. 1*
3. *कु. शिवानी मातनहेलिया संगीत निबंध संग्रह पृ. 16*
4. *अमर उजाला अखबार में 29 जनवरी 2012 को प्रकाशित खबर से*
5. *अमर उजाला अखबार में 29 जनवरी 2012 को प्रकाशित खबर से*
6. *अमर उजाला अखबार में 29 जनवरी 2012 को प्रकाशित खबर से*